भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ–226 101 (भारत)
ICAR-Central Institute for Subtropical Horticulture
Rehmankhera, PO Kakori, Lucknow-226 101, U.P. (India)
Telephone : (O): 2841022, 2841023, 2841024; Fax : 0522-2841025
Web Site : www.cishlko.org; E-mail : cish.lucknow@gmail.com

Dated: 03. 02. 2016

भुनगा कीट की रोकथाम के लिए परामर्श

चित्रः भुनगा कीट की आम के बौर एवं पत्तियों पर विभिन्न अवस्थाऐं

आम का भुनगा (फुदका या लस्सी) एक अत्यंत हानिकारक कीट है जो गंभीर अवस्था में आम की फसल को हानि पहुँचा सकता है। यह बौर, कलियों तथा मुलायम पत्तियों पर एक–एक करके अण्डे देते हैं और शिशु अंडे से एक सप्ताह में बाहर आ जाते हैं। बाहर आने के बाद शिशु एवं वयस्क पुष्पगुच्छ (बौर), पत्तियों तथा फलों के मुलायम हिस्सों से रस को चूस लेते हैं। इससे पेड़ के बौर एवं फल पर बुरा प्रभाव होता है और विशेषकर बौर नष्ट जाता है। परिणामस्वरूप फल अविकसित अवस्था में गिर जाते हैं। भारी मात्रा में भेदन तथा सतत रस चूसने के कारण पत्तियॉ मुड़ जाती हैं तथा प्रभावित ऊतक सूख जाते हैं। यह एक मीठा चिपचिपा द्रव भी निकालते हैं जिस पर सूटी मोल्ड (काली फफूँद) का वर्धन होता है। सूटी मोल्ड एक प्रकार की फफूँद होती है जो पत्तियों में होने वाली प्रकाश संष्लेषण की क्रिया को कम करती है। भुनगा कीट पूरे वर्ष देखा जाता है किन्तु फरवरी से अप्रैल के बीच इसका प्रकोप अधिक होता है।

कुछ बागों में इस समय भुनगा दिखने लगा हैं तथा विकसित हो रहे पुष्पगुच्छों पर क्षति करने लगा है। इस समय तापमान बढ़ना शुरू हो गया है, अतः आम के बौर में भुनगों की संख्या बढ़ने की संभावना है। किसानों को सलाह दी जाती है कि भुनगे के प्रकोप की अवस्था में तत्काल इमिडाक्लोप्रिड (0.3 मि. ली./ली. पानी) तथा साथ में स्टिकर (1 मि. ली./ली. पानी) का पुष्पगुच्छ निकलने की अवस्था में छिड़काव करना चाहिए।

सूचना संबंधी संपर्क हेतुः– निदेषक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (0522–2841022/0522–2841172) से सम्पर्क करें।